डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

बीए हिंदी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, प्रथम पत्र तथा बीए प्रथम खंड वैकल्पिक हिंदी

भक्तिकालीन प्रवृतियां और प्रमुख कवि

भक्तिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं-

1.नाम की महिमा – भक्तिकालीन कवियों ने ईश्वर के नाम स्मरण को अत्यधिक महत्व दिया है। सगुण एवं निर्गुण धारा के लगभग सभी कवियों ने अपने इष्टदेव के नाम की महिमा बताई है।

2.गुरु का महत्व – भक्त कवियों ने गुरु की महिमा का बखान किया है। कबीर तो गुरु को ईश्वर से भी बढ़कर मानते हैं क्योंकि ईश्वर से परिचय करवाने वाले गुरु ही हैं।

“गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागू पाय।

बलिहारी गुरु आपनो जिन गोविंद दियो बताय।।”

गुरु की कृपा के बिना ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती है। सूफ़ी कवियों ने भी ईश्वर से मिलाने वाले गुरु का स्थान ईश्वर से अधिक माना है। रामभक्ति धारा एवं कृष्ण भक्तिधारा के कवियों ने भी गुरु की महिमा का अनंत वर्णन किया है।

3. अहंकार का त्याग – सभी भक्त कवियों ने ईश्वर – प्राप्ति के लिए अहंकार के त्याग पर बल दिया है। ईश्वर की भक्ति में अहंकार का विसर्जन कर देना भक्तकवियों की विशेषता रही है –

“तू तू करता तू भया मुझमें रही न हूं।

बारी तेरे नांव की जित देखूँ तित तू।।”

4. भक्ति – भावना – इस काल में भक्तिभावना का प्राबल्य था। देश की तत्कालीन विषम परिस्थितियों के कारण इस काल के कवियों का ध्यान ईश्वरोन्मुख हो गया था। सादगीपूर्ण त्यागमय जीवन में भक्तकवि विश्वास करते थे। कबीर, सुर, तुलसी, मीरा आदि भक्तकवि ईश्वर के अतिरिक्त और कहीं भी अपनी गति नहीं देखते थे। सगुणोपासना में रामभक्ति धारा में राम और कृष्णभक्ति धारा में कृष्ण उपास्य थे। कृष्ण भक्तिधारा में श्रृंगार तथा वात्सल्य रस एवं सख्य भाव की प्रधानता थी तथा रामभक्ति धारा में शांत रस एवं दास्य भाव की प्रधानता थी।

5. बाह्य – आडंबरों का विरोध – भक्ति कालीन संत कवियों ने बाह्य – आडंबरों का विरोध किया है। जाति – पाँति, रूढ़ियों, अंधविश्वास आदि का इन सबने खंडन किया।

6. लोकमंगल की भावना – भक्तिकालीन काव्य में लोकमंगल की भावना को प्रमुखता दी गई है। स्वहित के स्थान पर परहित की भावना को अधिक महत्व दिया गया है। भक्तिकालीन कवियों ने जनकल्याण की भावना को मुख्य रूप से प्रश्रय दिया है।

7. ईश्वर के सगुण एवं निर्गुण दोनों रूपों की उपासना – भक्तिकालीन कवियों ने ईश्वर के सगुण एवं निर्गुण दोनों रूपों को स्वीकार किया है तथा दोनों ही रूपों में उसकी महिमा का वर्णन किया है। तुलसी और सूर ने सगुण रूप की उपासना की है, नामदेव, कबीर, दादू, नानक, रैदास आदि ने निर्गुण रूप की उपासना की है।

8. प्रेमकथाओं का निरूपण – निर्गुणोपासना के प्रेमाश्रयी कवि भारतीय लोक – जीवन में प्रचलित कथाओं एवं इतिहास – प्रसिद्ध प्रेम – गाथाओं पर आधारित काव्य लिखते थे। जायसी, कुतुबन, मंझन आदि कवियों ने अपने प्रेमाख्यानक काव्य में इन्हीं लोक – कथानकों को आधारस्वरूप लिया है।

9. राज्याश्रय से मुक्ति – आदिकालीन कवि राज्याश्रय में रहकर राजाओं की वीरता का प्रशस्ति – गान कर रहे थे, परंतु भक्तिकालीन कवियों ने राज्याश्रय से मुक्त रहकर मुक्त कंठ से ईश्वर की स्तुति की।

भक्तिकाल में सगुण भक्तकवियों में तुलसी और सुर प्रमुख कवि हुए तथा निर्गुण भक्त कवियों में कबीर, दादू, रैदास, नानक आदि प्रमुख कवि हुए।